ISSN: 2584-0231(Online)
International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology
© IJMRAST | Vol. 2 | Issue 2 | February 2024
Available online at: https://ijmrast.com
DOI: https://doi.org/10.61778/ijmrast.v2i2.40

सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका

डॉ० प्रमोद कुमार सिंह[1], एकता सिंह[2]

[1]शोध निर्देशक, एसो० प्रोफेसर–समाजशास्त्र, के.एन.आई.पी.एस.एस. सुलतानपुर

[2]शोधार्थिनी–समाजशास्त्र, डॉ.रा.म.लो. अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या, उ.प्र.

[2]**Email:** ektasingh.dev@gmail.com

सारांशः

भारतीय समाज में व्याप्त अन्धविश्वास, छुआछूत, भेदभाव, ऊँचनीच, जाति–पांति आदि अशिक्षा की ही देन है। आलस्य प्रमाद, अकर्मण्यता, निराशा, निरुत्साह तथा आवेग, अवज्ञा आदि मानसिक विकारों की जननी भी निरक्षरता ही है। कदाचित् ही कोई दुर्गुण, दुव्यसन अथवा दुष्कृत्यता होगी जिसको निरक्षरता ने जन्म न दिया हो। धर्म का ठीक –ठीक स्वरूप न समझे अशिक्षित व्यक्ति जाने कितने देवी–देवताओं, भूत–पलीतों और मियाँ– मसानों की पूजा करते है। अशिक्षित नारियाँ तो इन अन्धविश्वासों की इतनी वंदिनी हो जाती है कि प्रपंची लोगों के बहकावे में आकर शील–सम्पत्ति तक गवाँ बैठती है। महामना मुनियों की संतान एवं सनातन ज्ञान के आधिकारी भारतवासी आज इस प्रकार अज्ञान में डूबे हैं कि उनमें और अन्य जीवों में कोई भेद नहीं रह गया है। गन्दगी, अश्लीलता, आचरण– हीनता, दुराचार, भ्रष्टाचार आदि के अवगुण उनके समाज व स्वभाव के अंग बन गये हैं। आदर्श जीवन क्या है, मानवता किसे कहते हैं, राष्ट्रीयता का स्वरुप क्या होता है, सामाजिक जीवन की मान्यताएँ क्या हैं, इनमें से आज कितने भारतीय परिचित है? अज्ञान का यह अन्धकार इस आर्ध और आर्षभूमि पर भयानक कलंक है। इसके मूल में अशिक्षा है। अतः समाज और व्यक्ति में परिवर्तन लाने हेतु शिक्षा को मजबूत और सार्थक करने की आवश्यकता है।

शब्द संकेतः *शिक्षा, सामाजिक परिवर्तन, शिक्षा द्वारा सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक परिवर्तन में बाधाएँ, सतत शिक्षा और निष्कर्ष।*

शोध पत्र के उद्देश्यः

1. सामाजिक परिवर्तन के विषय में अध्ययन करना।
2. शिक्षा द्वारा सामाजिक परिवर्तन किस प्रकार सम्भव है, अर्थात शिक्षा की भूमिका बताना।
3. सामाजिक परिवर्तन में उत्पन्न बाधाओं–कारकों का अध्ययन करना
4. सामाजिक परिवर्तन निमित्त सतत शिक्षा का अध्ययन करना, तथा
5. सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका का अध्ययन करना है।

सामाजिक परिवर्तनः

प्रत्येक समाज की अपनी संरचना, व्यवहार प्रतिमान और सामाजिक कार्यों को सम्पादित करने की विधियाँ होती है और इस संरचना, व्यवहार प्रतिमानों का कार्य–विधियों में सदैव परिवर्तन होता रहता हैं, कुछ समाजों में यह परिवर्तन

मन्द–मन्द तो कुछ में सामान्य गति से और कुछ में तीव्र गति से होता है। इस प्रक्रिया को समाजशास्त्रीय भाषा में 'सामाजिक परिवर्तन' कहते हैं।

- गिलिन और गिलिन के अनुसार–" सामाजिक परिवर्तन को हम जीवन की स्वीकृत विधियों में होने वाले परिवर्तन के रूप में परिभाषित कर सकते हैं।"
- जानसन महोदय के अनुसार – "सामाजिक परिवर्तन को व्यक्तियों की क्रियाओं और विचारों होने वाले परिवर्तनों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

इस प्रकार सामाजिक परिवर्तन से तात्पर्य किसी समाज की संरचना, उसके व्यवस्था, प्रतिमान और उसकी कार्य विधियों में परिवर्तन से है। इस परिवर्तन के कारक के रूप में भौगोलिक स्थिति, जैविकीय कारक, सांस्कृतिक कारक और प्रमुख रूप से विज्ञान, प्रौद्योगिकी के साधन हैं।

शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन

शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन का गहरा समबन्ध है। समाज और आकांक्षाओं की पूर्ति शिक्षा द्वारा ही संभव है। सामाजिक दृष्टि से शिक्षा के समस्त कार्यों को दो वर्गो में अभिव्यक्त किया जाता है – सामाजिक नियन्त्रण और सामाजिक परिवर्तन । शिक्षा गतिशील प्रक्रिया देने के कारण समाज के परिवर्तनों को स्वीकार करती हुई आगे बढ़ती है। साथ ही बदलते समाज की आवश्यकता की पूर्ति में शिक्षा सहायक भी है। इस प्रकार सामाजिक परिवर्तन शिक्षा के स्वरूप उदेश्य और पाठ्यचर्या आदि को बदलते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन करती है और सामाजिक परिवर्तन शिक्षा को प्रभावित करते है। यह चक्र सदैव चलता रहता हैं।

जीवन एक संघर्षमय प्रक्रिया है जिसे शिक्षा ही संबल प्रदान करती है। शिक्षा माता के समान रक्षा, पिता के समान हित साधक, पत्नी के समान सहगामिनी बन अनुरंजन करती है। अंधकार की स्थिति में प्रकाश है। **पेस्टोलॉजी के अनुसार** "शिक्षा व्यक्ति की अनिवार्य आवश्यकताओं में से एक है और इसकी पूर्ति का दायित्व समाज को उठाना ही चाहिए"। अतः शिक्षा और समाज का घनिष्ठ संबंध होता है ।

1. शिक्षा सामाजिक परिवर्तन के लिए एक आवश्यक शर्त या आधार है :–

भारत सहित विश्वभर के देशों में अब यह महसूस किया जा रहा है कि जनता को शिक्षा प्रदान किये बिना समाज में परिवर्तन लाना सम्भव नहीं है। राज्य चाहे कोई भी परिवर्तनकारी संविधान, कानून आदि बना ले और लागू कर दे, किन्तु वह सही अर्थ में प्रभावशाली ढंग से सामाजिक व सांस्कृतिक परिवर्तन नहीं ला सकता, जब तक कि जनसाधारण को कम से कम (आवश्यकता पूर्ति करने वाली, प्रभावी) शिक्षा उपलब्ध नहीं करायी जाती। इसके कई उदाहरण दिये जा सकते हैं–

1. हमारे देश में आज भी कई राज्यों (जैसे राजस्थान, हरियाणा, मध्य प्रदेश) में बाल–विवाह हजारों की संख्या में प्रतिवर्ष हो रहे हैं। यद्यपि बाल–विवाह निरोधक 'शारदा एक्ट' कई दशकों पूर्व लगाया गया था। ग्रामीण जनता में शिक्षा के अभाव के कारण अभी तक अधिकांश लोग बाल–विवाह से होने वाली गम्भीर बुराइयों व हानियों से अज्ञानी बने हुए हैं।
2. अशिक्षा के कारण आज भी करोड़ों भारतीय गंभीर अंधविश्वास में जकड़े हुए हैं।
3. शिक्षा के अभाव में देश की अधिकांश जनता अपने उपभोक्ता के अधिकारों को नहीं जानती है और धोखेबाज निर्माताओं तथा विक्रेताओं के शोषण का शिकार बनी हुई है।

4. धर्मनिरपेक्ष तथा आधुनिक शिक्षा न मिलने के कारण ही भारत में करोड़ों मतदाता अपने बहुमूल्य वोट को चुनावों में धर्म व जाति के आधारों पर तथा शराब, अनाज व रुपयों को लेकर अनुचित, अयोग्य व अपराधी लोगों के पक्ष में डालते हैं जिससे देश में वांछनीय प्रकार का सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिवर्तन नहीं होता।

कई क्षेत्रों व स्थानों पर पहले आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक परिवर्तन हो जाता है और उसके कारण उत्पन्न हुई शिक्षा की माँग को पूरा करने के लिए शिक्षा संस्थाएँ खोली जाती हैं और शिक्षा का प्रसार होता है। आर्थिक वैश्वीकरण पहले आया है और उसकी माँगों को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार के उच्चस्तरीय व्यावसायिक प्रशिक्षण कोर्स प्रदान करने वाली संस्थानों को खोला गया है और अभी जारी किया जा रहा है। विदेशों के विश्वविद्यालयों में भी पढ़ने के लिए हजारों भारतीय विद्यार्थी जा रहे हैं।

2. सामाजिक परिवर्तन को लाने वाले प्रभावी संयन्त्र या अभिकर्ता के रूप में शिक्षा की भूमिका :

शिक्षा केवल ज्ञान ही प्रदान नहीं करती, बल्कि इन कार्यों को भी करती है–

1. दृष्टिकोणों को बनाती है, मूल्यों को विकसित करती है और महत्त्वाकांक्षाओं के क्षेत्र को बढ़ाती है।
2. मनोबल तथा आत्म–सम्प्रत्यय को बढ़ाती है, धर्मनिरपेक्ष बनाती है और कार्यकुशलता को बढ़ाती है।
3. सांसारिक चेतना को विकसित करती है, तार्किक तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोणों वाला व्यक्ति बनाती है, आर्थिक सम्पन्नता बढ़ाती है, साथ ही क्रियात्मकता को विकसित करती है।
4. सामाजिक गत्यात्मकता को विकसित करती है, व्यक्ति को अपने अधिकारों और कर्त्तव्यों व उचित व्यवहारों के बारे में बताती है।
5. व्यक्ति को समानतावादी बनाती है, सामाजिक रूप से चेतन व सजग बनाती है। समाज–सुधार व परिवर्तन के लिये कटिबद्ध बनाती है।
6. नागरिकता की भावना को विकसित करती है। शिक्षा को इन विविध शक्तियों और सामर्थ्यों के कारण शिक्षा सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिवर्तन लाने में एक बहुत प्रभावशाली साधन–उपकरण बन गई है। यह सामाजिक परिवर्तन का शाश्वत साधन है। इसके कई उदाहरण प्रस्तुत किये जा सकते हैं–

a. आधुनिक शिक्षा प्राप्त भारतीय, अंग्रेजी भाषा को भली–भाँति जानते हैं, अतः विदेशों में वे ही अन्य देशों के नागरिकों की अपेक्षा अधिक संख्या में विभिन्न व्यवसायों में कार्य कर रहे हैं। वैश्वीकरण में भारतीय विशेषज्ञों की भारी भूमिका है जिसे विश्वभर में स्वीकार किया जा रहा है।

b. शिक्षा में सामाजिक परिवर्तन की महत्त्वपूर्ण भूमिका को महसूस करते हुए ही सरकारें कई प्रकार की शिक्षा योजनाएँ चला रही हैं, जैसे सर्वशिक्षा अभियान, कम्प्यूटर साक्षरता अभियान, स्त्री शिक्षा अभियान, अल्पसंख्यकों की शिक्षा को सुधारने व प्रसारित करने के लिए विविध कार्यक्रम, अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लिए कई शिक्षा सम्बन्धी कार्यक्रम आदि।

सामाजिक परिवर्तन लाने में उत्पन्न बाधाएँ :–

यदि वर्तमान भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन लाने में शिक्षा की भूमिका को महत्त्वपूर्ण माना जा रहा है, तो उसके मार्ग में बहुत–सी गम्भीर बाधाएँ उपस्थित है जिसके फलस्वरूप आधुनिक भारतीय शिक्षा अपना परिवर्तन का कार्य भली–भाँति नहीं कर पा रही है –

1. अधिकांश शिक्षा संस्थाओं में आवश्यक व उत्तम साधनों का अभी तक घोर अभाव है। गाँवों, मुस्लिम बस्तियों, गन्दी बस्तियों की पाठशालाओं में विशेषकर इनका गम्भीर अभाव है।

2. अधिकांश शिक्षा संस्थाओं में शिक्षकों की संख्या बहुत कम है।
3. शिक्षा की गुणवत्ता की चर्चाएँ तो बार–बार होती है, लेकिन वास्तव में पाठशालाओं और उच्च शिक्षा संस्थाओं में इस पर बहुत कम जोर दिया जा रहा है। पुरानी, घिसी–पिटी परिपाटी ही चल रही है।
4. विश्वविद्यालयों, शिक्षा संस्थाओं, शिक्षा विभागों में भ्रष्टाचार निरन्तर बढ़ता जा रहा है।
5. भारतीय शिक्षा संस्थाओं में धर्मनिरपेक्षता को आदर्श सिद्धान्त तो माना गया है, लेकिन यह सर्वविदित है कि धर्म, जाति और राजनीतिक दबाव से शिक्षकों की नियुक्तियाँ व विद्यार्थियों का प्रवेश होता है। पक्षपात और भ्रष्टाचार ने पूरी शिक्षा व्यवस्था को प्रभावहीन और दूषित कर दिया है।
6. शिक्षा बहुत महँगी होती जा रही है। शिक्षा के निजीकरण की नीति बहुत जोर पकड़ चुकी है। फलस्वरूप आने वाले वर्षों में भारतीय जनसंख्या का एक बहुत बड़ा प्रतिशत शिक्षा से वंचित रह जाने को बाध्य होगा।
7. अधिकतर लोग सामाजिक परिवर्तन का अर्थ ऊँची आर्थिक सम्पन्नता और ऊँची सामाजिक वर्ग स्थिति पाना मानते हैं और शिक्षा का सारा प्रयास इसी ओर लग गया है। यह भुलाया जा रहा है कि सामाजिक सुधार, उत्तम नैतिक और सामाजिक गुणों के विकास तथा जनहितकारी सहयोगी कार्यक्रमों को बढ़ावा दिये जाने बिना तथा सभी को मानवाधिकारों की रक्षा करने व सभी को सुरक्षा और न्याय प्रदान कराने में अक्षम होने पर शिक्षा निरर्थक बन जाती है।

इन बाधाओं को हटाये बिना भारतीय शिक्षा सही प्रकार का सामाजिक परिवर्तन लाने में असमर्थ रहेगी। समाजशात्रियों के सामने यह गम्भीर चुनौती है।

सामाजिक परिवर्तन हेतु सतत् शिक्षा :–

समाज की संरचना परिवारों से होती है, और परिवार की महत्त्वपूर्ण इकाई है। इस प्रकार व्यक्ति–समूहों का नाम समाज है। व्यक्ति, मूलतः कार्य–कलापों का केन्द्र होता है और उसके इन कार्य–कलापों का प्रभाव समाज और घर पर पड़ता है। उसका पोषक का रूप है तो शोषक का रूप भी है। उसका स्वार्थ समाज के लिए कल्याणप्रद है तो कभी वह कष्टप्रद भी हो जाता है। उसका रूप सुहावना है तो कभी डरावना भी है। शिक्षित होकर भी वह अशिक्षित का सा आचारण करता है। इस प्रकार, मानव–व्यवहार से आबद्ध है समाज। परिवर्तन के मूल में समाज ही होता है और समाज ही परिवर्तन की गति भी प्रदान करता है। परिवर्तन को सही दिशा प्रदान करने का काम शिक्षा का है। समुचित शिक्षा ही समाज को परिवर्तन में सहभागी बनाती है और उसकी अपेक्षाओं को पूरा करती है।

मनुष्य परिस्थितियों का दास है, और सतत शिक्षा के माध्यम से हम उन परिस्थितियों का बखूबी सामना करने में समर्थ होते हैं जिससे न केवल उसका ही वरन् समाज का भी कल्याण होता है। इसी में देश का हित भी निहित है। इसी कारण आज न केवल भारतवर्ष में वरन् सम्पूर्ण विश्व में मानव को शिक्षित करने की होड़ लगी हुई है जिससे कि वह विश्व का नागरिक कहलाने का गौरव प्राप्त कर सके और 'बसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना जाग्रत होकर विश्व कल्याण की बात सोचना शुरू करे।

आज हम ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में जो भी विकास कर उपलब्धियाँ प्राप्त की है, उनसे क्या हम समाज के सदस्यों को औपचारिक शिक्षा द्वारा परिचित करा सकते हैं। हमारे, जनकल्याण की योजनाओं सम्बन्धित सारे प्रयास निष्प्रभावी है, यदि हम उन्हें समुदाय और समाज की प्रत्येक इकाई (व्यक्ति) तक उनका लाभ नहीं पहुँचा पाते हैं।

शैक्षिक संस्कार ज्ञान के संरक्षक एवं वाहक है और उनसे प्राप्त उपलब्धियों को जनमानस तक मात्र पहुँचाना ही नहीं, अपितु समाज के सर्वांगीण विकास के लिए सारे समुदायों को ज्ञान या बोध कराकर विकास की मुख्य धारा से

जोड़ना है। यह संस्थाओं तथा उनके शिक्षित व्यक्तियों द्वारा ही सम्भव हो सकता है। विकास सुविधा–विहीन मनुष्य भी उनका आनन्द प्राप्त करने में सक्षम हो सकें। इसके लिए हम सतत शिक्षा को ही एक मात्र माध्यम, इस युग में ही नहीं, वरन अतीत में भी मानते आए हैं। इसके लिए उच्च शिक्षा संस्थाओं द्वारा जीवन के विभिन्न क्षेत्रों की समस्याओं का अध्ययन कर उनका समाधान प्रदान करना होगा और जो केवल सतत शिक्षा द्वारा ही सम्भव हो सकता है।

सतत शिक्षा, व्यक्तियों को इस योग्य बनाती है कि वे अपने उपयुक्त कौशल, योग्यता अभिवृत्तियों का विकास कर सकें। 'सुप्रसिद्ध चिंतक प्लेटो के अनुसार' नागरिकता की शिक्षा ही एकमात्र सच्ची और स्थायी राज्य को स्थापित करने में सक्षम है।

अतः, सतत शिक्षा के माध्यम से व्यक्तियों की कार्य–क्षमता व कार्य–कुशलता का विकास कर उत्पादन–वृद्धि, निर्णय लेने की क्षमता, नेतृत्व प्रदान करने की दक्षता, सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक उत्थान के साथ–साथ जटिल एवं त्वरित सामाजिक परिवर्तनों की विशेषता के साथ शारीरिक श्रम का महत्त्व, अड़ोस–पड़ोस में सह–अस्तित्व, प्राकृतिक वातावरण, स्वच्छता और स्वस्थता के निमित्त समाज–सेवा और विकास–कार्यक्रमों आदि में सहभागिता के साथ राष्ट्र का उत्थान करना है।

वर्तमान भारतीय समाज में गुणात्मक परिवर्तन निमित्त शिक्षा की भूमिका को महत्वपूर्ण माना जाना चाहिए। इस सन्दर्भ में बहुत–सी गंभीर बाधाएँ आयी है और आज भी आ रही है। अतः आवश्यक है कि निम्नांकित प्रवृत्तियों को समझकर वांछित उपाय किए जायें–

1. अधिकांश शिक्षा संस्थाओं में आवश्यक संसाधन बढ़ायें जाए। इस दृष्टि से गाँवों, मुस्लिम बस्तियों, गंदी बस्तियों की पाठशालाओं को विशेष दृष्टि में रखा जाए।
2. अधिकांश शिक्षा–संस्थाओं में शिक्षकों की संख्या बढ़ाई जाए।
3. शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि लायी जाए।
4. सभी शिक्षण संस्थाओं में व्याप्त भ्रष्टाचार को दूर किया जाए।
5. भारतीय शिक्षा–संस्थाओं में पंथ निरपेक्ष सिद्धांत को लागू किया जाए।
6. महँगी होती जा रही शिक्षा को सरकारों के द्वारा सस्ता बनाया जाए। शिक्षा के निजीकरण पर नियंत्रण रखने की आवश्यकता है।
7. सर्वजन समाज द्वारा जनहितकारी, सहयोगी कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाए।
8. मानवाधिकारों की रक्षा करते हुये सभी को सुरक्षा व न्याय प्रदान किया जाए।

निष्कर्षः

सारांशतः, सामाजिक परिवर्तन के लिए शिक्षा को एक आवश्यक प्राथमिक शर्त माना जाए। शिक्षा के द्वारा ही सामाजिक परिवर्तन को सकारात्मक गति मिलेगी। शिक्षा के द्वारा ही वांछित सामाजिक परिवर्तन तथा आधुनिकीकरण लाया जा सकता है। एवंविध, देश और विश्व में शिक्षा की भूमिका को महत्वपूर्ण मानते हुए गुणात्मक राष्ट्रीय विकास को तीव्रगति प्रदान की जा सकेगी। सामाजिक परिवर्तनों को तीव्र करने हेतु दूर संचार साधनों का उपयोग किया जा सकता है। इससे सामाजिक परिवर्तन की दिशा और दशा में तीव्र परिवर्तन देखने को मिला। सामाजिक परिवर्तन के लिए शिक्षा निर्विवाद रूप से महत्वपूर्ण है। समाज को निरंतर होने वाले परिवर्तन के साथ ले जाने का दायित्व राष्ट्रीय नेतृत्व का होता है। परिवर्तन अनेक दिशाओं में होता है और शिक्षा ही उन परिवर्तनों से परिचित करा कर गुणात्मक लाभ पहुंचाती है।

संदर्भ :

[1]. डॉ पांडेय, गौरीशंकर : सतत शिक्षा की रूपरेखा, उषा प्रकाशन अयोध्या।

[2]. लाल रमन बिहारी : शिक्षा के सिद्धांत, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ।

[3]. डॉ शुक्ला रमा : शिक्षा के दार्शनिक आधार, आलोक प्रकाशन, लखनऊ।

[4]. डॉ पांडेय, राम सकल : शिक्षा की दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

[5]. भटनागर, सुरेशः आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ, लॉयल बुक डिपो, मेरठ।

Cite this Article

***डॉ० प्रमोद कुमार सिंह, एकता सिंह, "सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका"**, International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology (IJMRAST), ISSN: 2584-0231, Volume 2, Issue 2, pp. 23-28, February 2024.*

***Journal URL:** https://ijmrast.com/*

***DOI:** https://doi.org/10.61778/ijmrast.v2i2.40*

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.